International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2018; Page No. 204-206

गाजियाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

कनक राणा
प्रावक्ता शिक्षा विभागं, नोएडा कालेज ऑफ फिजिकल एजूकेषन, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारंश
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। लेकिन विभिन्न शोधों के माध्यम से पाया गया है कि जाति, वर्ग भी शैक्षिक रूचि को प्रभावित करते हैं तथा दो वर्गों की शैक्षिक रूचि का स्तर समान है या नहीं अथवा सामान्य जाति के बच्चे अनुसूचित जाति के बच्चों से शैक्षिक रूचि में भिन्न है या नहीं। यह शोध गाजियाबाद जनपद में अनुभाविक शोध की सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर सम्पन्न किया गया है। सर्वप्रथम गाजियाबाद जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से देव निदर्शन पद्धति के आधार पर 10 माध्यमिक सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया तदोपरान्त चयनित विद्यालयों से देव निदर्शन पद्धति के आधार पर 100 विद्यार्थियों को चुना गया। गाजियाबाद जनपद से उन्हीं माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है जो सरकार से मान्यता प्राप्त है तथा जिन विद्यालयों मे छात्र छात्राऐं दोनों शिक्षा ग्रहण करते हैं। इन विद्यालयों में 100 विद्यार्थियों में से 50 अनुसूचित जाति के छात्र–छात्रायें हैं जिनमें से 26 छात्र तथा 24 छात्राओं को लिया गया है तथा 50 सामान्य जाति के विद्यार्थी हैं जिनमें 25 छात्र तथा 25 छात्राओं को लिया गया हैं चयनित विद्यार्थियों से सूचनाओं को एकत्रित करने के लिए डॉ0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ का शैक्षिक रूत्रि अभिपत्र का प्रयोग किया गया। प्राप्त सूचनाओं से छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि का विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया।निष्कर्षतः इसमें सामान्य व अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। उनके विचारों के अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में अन्तर होता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि बच्चों की रूचियों के आधार पर ही शिक्षा प्रदान की जाये तभी विद्यार्थी शिक्षा में रूचि लेगा और माध्यमिक स्तर शिक्षा को सही दिशा मिलेगी।

मूलशब्द : शिक्षा, अनुसूचित जाति, गाजियाबाद जनपद

प्रस्तावना
किसी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का मुख्य आधार शिक्षा है। षिक्षा वह प्रकाष है जिसके द्धारा व्यक्ति की समस्त शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है इससे वह समान का उतरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रवर चरित्र सम्पपन नागरिक बनकर समाज की सर्वागीण उन्नति मे अपनी शक्ति का प्रयोग करता है

शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है शिक्षा बालक का सर्वागीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्विमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनती है षिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढी के बालको को उच्च आदर्षो, आषाओ, आकाक्षांओ, विष्वासो तथाा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक, सम्पति को इस प्रकार से इस्तान्तरित करता है कि उनके हद्वय मे देष प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है। वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा वही है जो बालक का सर्वांगीण विकास करें।

शिक्षा की प्रक्रिया कई घटकों का समूह है जैसे अध्यापक, छात्र, पाठ्यक्रम, विद्यालय प्रबन्धन तथा सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक इन कारकों में रूचि का प्रमुख स्थान है। जिसका शिक्षा की प्रक्रिया मेंप्रमुख स्थान है। जब तक बालक में पढाने में रूचि उत्पन्न नहीं की जाती तब तक शिक्षण – अधिगम की प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती। शैक्षिक रूचि पर समाज के जाति, वर्ग, पाठ्यक्रम का समाज पर प्रभाव देखा गया है। शैक्षिक रूचि में अनेक विषय जैसे कृषि, वाणिज्य, कला, गृह विज्ञान, तकनीकी आदि है। इन विष्यों में अनेक उपविषय होते हैं जिसमें छात्रों की इन विषयों में रूचि देखी जाती है। छात्र अपनी रूचि, क्षमता तथा प्रतिभा से अपना विकास कर सकता है। अध्यापक को छात्र की रूचि के अनुसार किसी प्रकरण को पढ़ाना चाहिए जिससे छात्र आसानी से किसी प्रकरण को समझ सके। क्योंकि छात्र की जिस प्रकरण में रूचि होती है छात्र उसे जल्दी सीखता है। दूसरा शिक्षक की शिक्षण शैली ऐसी हो कि छात्र उस विषय में रूचि ले जिसे शिक्षक पढ़ा रहा है। उसे छात्रों में प्रकरण के प्रति रूचि उत्पन्न करने के बाद ही शिक्षण कार्य शुरू करना चाहिए।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की इण्टरमीडिएट की परीक्षा में हिन्दी में काफी छात्र फेल हुए थे। दूसरी तरफ फेल होने वाले छात्र गणित व अंग्रेजी विष्यों में थे। कारण क्या था ? छात्रों की इन विषयों में रूचि नही थी या विषय कठिन स्तर के थे। इसका उत्तर शिक्षा में बिना शोध के सम्भव नहीं है। दूसरी तरफ छात्रो की विषयक रूचियों का पता बिना शोघ कार्य के नहीं लगाया जा सकता है। क्योंकि विभिन्न विद्यालयों में अनेक छात्र विभिन्न जाति वर्ग तथा विभिन्न पारिवारिक परिस्थितियों से आते हैं। ये सभी उनकी रूचियों में विविधता लाते हैं। इनका उत्तर शोध कार्य से ही सम्भव है। इस तरह अगर देखा जाये तो जाति वर्ग का भी शैक्षिक रूचि पर प्रभाव पडता है अर्थात यदि अनुसूचित जाति के छात्र सामान्य जाति के छात्रों से शैक्षिक रूचि में भिन्न होते हैं या दो वर्गों का शैक्षिक रूचि स्तर समान है या नहीं या क्या जाति का शैक्षिक रूचि पर प्रभाव पडता है अथवा नहीं रूचियां व्यक्तिगत रूप

से विविध होती है कोई छात्र आई.आई.टी. में जाना चाहता है तो कोई एम.बी.ए. करना चाहता है तो कोई बी.टेक इस तरह से उनकी शैक्षिक प्रतिभा का उपयोग भविष्य में किया जा सकता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में बालक की प्रतिभा को तभी निखारा जा सकता है जब उसकी रूचि को पहचाना जाये। शैक्षिक रूचि वाले शोध कार्य से प्रेरित होकर सरकार, शिक्षाविद, मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा नीति निर्धारक विधिक शैक्षिक रूचि वाले संस्थानों की स्थापना में सहयोग कर सकते हैं। इस लिए अनुसंधानकर्ती ने माध्यमिक स्तर के सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करने का निर्णय लिया है ताकि विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का पता लगाया जा सके और उनकी रूचि के अनुसार उन्हें पढाया जा सके। तथा समाधान प्रस्तुत किए जा सके। उक्त शोध के द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययन के उपरान्त सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति की छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के सामान्य व अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह शोध गाजियाबाद जनपद में सर्वेक्षध पद्धति के आधार पर सम्पन्न किया गयाहै। गाजियाबाद जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से देवनिदर्शन पद्धति के आधार पर 10 मा0 सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया तदोपरान्तचुने हुए विद्यालयों से देव निदर्शन पद्धति के आधर पर 100 विद्यार्थियों को चुना गया। इसमें उन्हीं मा0 विद्यालयों को चुना गया जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। तथा जिसमें छात्र–छात्राऐं दोनों शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसमें 100 विद्यार्थियों में से 50 अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राऐं हैं जिनमें से 26 छात्र तथा 24 छात्रायें अनुसूचित जाति के हैं तथा 50 विद्यार्थी सामान्य जाति के हैं जिनमें 25 छात्र व 25 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। चयनित विद्यार्थियों से सूचनाओं का संकलन किया गया। सूचनाओं के संकलन के लिए डा0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ का शैक्षिक रूचि अभिलेख का प्रयोग किया गया।

परिणाम

शोधकर्ती द्वारा अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा निम्न परिणाम प्राप्त हुए –

1. अनुसूचित जाति तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों में कृषि विषय के प्रति रूचि में अन्तर होता है जहां वरीयता में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में रूचि 14 प्रतिशत है वहां सामान्य जाति का औसत 16 प्रतिशत रहा है। निम्नतम वरीयता में अनुसूचित जाति का प्रतिशत 36 तथा सामान्य जाति का प्रतिशत 20 रहा।
2. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की वाणिज्य की तम पसन्द 8 प्रतिशत रही वहीं सामान्य जाति के विद्यार्थी भी 8 प्रतिशत वाणिज्य को पसन्द करते हैं। यहां दोनों की रूचियों में अन्तर शून्य है। परन्तु अन्तिम पसन्द में 28 प्रतिशत अनुसूचित जाति के विद्यार्थी तथा 16 प्रतिशत सामान्य जाति के विद्यार्थी वाणिज्य विषय को पसन्द नहीं करते हैं।
3. अनुसूचित जाति के 20 प्रतिशत विद्यार्थी कला विषयमें रूचि रखते हैं वहीं सामान्य जाति के 24 प्रतिशत विद्यार्थी कला विषय में रूचि रखते हैं। अनुसूचित जाति के 14 प्रतिशत तथा सामान्य जाति के 16 प्रतिशत विद्यार्थी कला विषय में निम्नतम रूचि रखते हैं।
4. अनुसूचित जाति के 36 प्रतिशत विद्यार्थी गृहविज्ञान में रूचि नहीं रखते हें वहीं सामान्य जाति के 28 प्रतिशत विद्यार्थी गृह विज्ञान में रूचि नहीं रखते हैं। दोनों की रूचि में अन्तर है।
5. अनुसूचित जाति के 12 प्रतिशत छात्र मानविकी विषय में रूचि रखते हैं तथा वहीं सामान्य जाति के 18 प्रतिशत मानविकी विषय में रूचि रखते हैं। अनुसूचित के 26 प्रतिशत तथा सामान्य जाति के 02 प्रतिशत निम्नतम रूचि रखते हैं।
6. अनुसूचित जाति के प्रथम पसन्द में 10 प्रतिशत विद्यार्थी तथा सामान्य जाति के 12 प्रतिशत विद्यार्थी विज्ञान विषय में रूचि रखते हैं तथा निम्नतम वरीयता में यह क्रमशः 30 प्रतिशत तथा 04 प्रतिशत ही आया है।
7. तकनीकी विषय में अनुसूचित जाति के 14 प्रतिशत तथा सामान्य जाति के 06 प्रतिशत विद्यार्थी तकनीकी विषय को पसन्द करते हैं।

निष्कर्ष

प्रतिदर्श से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ज्ञात होता है कि–

- इसी प्रकार अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों में कला विषय में तम वरियता में रूचि में अन्तर होता है तथा निम्नतम वरियता में भी दोनों जातियों के विद्यार्थियों की रूचियों में अन्तर है।
- अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों में गृह विज्ञान की तम वरियता में कोई अन्तर नहीं है तथा निम्नतम वरियता में अन्तर आया इस प्रकार अनुसूचित जाति के विद्यार्थी सामान्य जाति के विद्यार्थियों की तुलना में गृह विज्ञान में रूचि कम रखते हैं।
- अनुसूचित जाति तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों में कृषि के प्रति रूचि में अन्तर होता है।
- इसी प्रकार सामान्य जाति व अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में वाणिज्य की तम वरियता में दोनों की रूचियों में अन्तर शून्य है तथा निम्नतम वरियता मेंदोनों की रूचियों में अन्तर है।
- अनुसूचित जाति तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों में मानविकी विषय की पसन्द में अन्तर आया है। इस प्रकार सामान्य जाति के विद्यार्थी अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में मानविकी विषय में रूचि अधिक लेते हैं।
- प्राप्त आंकडों से पता चला है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी सामान्य जाति के विद्यार्थियों की तुलना में तकनीकी विषय में अधिक रूचि लेते हैं।
- अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि में अन्तर होता है। इस प्रकार सामान्य जाति के छात्रों की विज्ञान विषय में रूचि अधिक है।

अनुसंधान की उपादेयता

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग के विद्यार्थी गृह विज्ञान को सर्वाधिक पसन्द करते हैं।इसके बाद कला, मानविकी, कृषि विज्ञान, वाणिज्य व तकनीकी विषय आते हैं। अत्यन्त कम वरियता वाले विषयों में सामान्य वर्ग के सबसे अधिक विद्यार्थी

तकनीकी को नापसन्द करते हैं उसके उपरान्त गृह विज्ञान, वाणिज्य, कृषि, कला, विज्ञान व मानविकी आते हैं।

अतः इन विषयों में विशेषतः तकनीकी, गृह विज्ञान, वाणिज्य में रूचि विषयक क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता है। दूसरी तरफ विद्यार्थियों का उन विषयों में प्रोत्साहन देना चाहिए जिसे वे अपनी स्वेच्छा से पसन्द करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि जाति, लिंग जैसी प्रवृत्तियां माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अपना प्रभाव डालती हैं। अतः आवश्यक है कि इस स्तर पर छात्रों की रूचियों को विभिन्न विषयों में बढ़ाने के प्रयत्न करने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. बेस्ट जी0 डबलू (1963) रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली।
2. एम0 वी0 बुच (1983–88) फोर्थ सर्वे रिसर्च इन एजुकेशन।
3. अस्थाना वी0 ''शिक्षा मनोविज्ञान में मूल्यांकन व मापन।
4. कपिल, एच0 के0, ''रीडिंग्स इन रिसर्च मैथेडोलॉजी'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
5. गेरट, हेनरी ई0 (2010) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
6. गुप्ता, एस0 पी0 (1998) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. पाण्डेय, के0 पी0 ''शैक्षिक अनुसन्धान की रूपरेखा'', अमित प्रकाशन, गाजियाबाद।
8. एम0 वी0 बुच (1988–92) फिफथ सर्वे रिसर्च इन एजुकेशन।